International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April - 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

''सूफी काव्य के प्रतिनिधि कवि मलिक मुहम्मद जायसी''

संतोष कुमार यादव (हिन्दी)
शासकीय श्यामा प्र0मुखर्जी महा0
सीतापुर,जिला– सरगुजा छ0ग0

भक्तिकाल के निर्गुण काव्यधारा को दो भागों में विभाजित किया जाता है – प्रथम, संतकाव्य तथा द्वितीय भाग सूफी काव्य। जिस प्रकार संतकाव्य में कबीर प्रतिनिधि कवि के रूप में जाने जाते हैं। जिन्होंने सन्त काव्य परम्परा का मार्ग प्रशस्त किया । ठीक उसी प्रकार मलिक मोहम्मद जायसी ने भक्तिकालीन प्रेमाख्यानक अथवा सूफी काव्य परम्परा के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं जिन्होंने अपने अद्वितीय रचनाओं से प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा के अन्य कवियों का पथ प्रदर्शन किया। इनकी रचनओं में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कृति है ''पद्मावत'' जिसे महाकाव्य की संज्ञा निःसंकोच दी जा सकती है। पद्मावत सही अर्थों में हिन्दी साहित्य के गौरव ग्रंथों में गिनी जाने वाली कृति है। जिसमें प्रेमकथा के माध्यम से जीवात्मा तथा परमात्मा के मिलन का सुन्दर सामंजस्य स्थापित किया गया है।

जयसी जी सूफी फकीर षेख मोहिदी के शिष्य थे और जास में रहते थे। इनकी छोटी सी पुस्तक 'आखिरी कलाम' के नाम से फारसी अक्षरों छपी मिलती है। यह सन् 936 हिजरी (सन् 1528 ई. के लगभग) बाबर के समय में लिखी गई थी। इसमें बाबर बादशाह की प्रशंसा है। इस पुस्तक में मलिक मुहम्मद जायसी ने अपने जन्म के संबंध में लिखा है –

''भा अवतार मोर नौ सदी । तीस बरस ऊपर कवि बदी।।''(1)

जायसी अपने समय के प्रसिद्ध फकीरों में गिने जाते थे। अमेठी राजघराने में इनका बहुत मान था। जीवन के अंतिम दिनों जायसी अमेठी से दो मील दूर एक जंगल में रहा करते थे। वहीं इनकी मृत्यु हुई। काजी नसरूद्दीन हुसैन जायसी ने, जिन्हें अवध के नवाब शुजाउद्दौला से सनद मिली थी, अपनी याददाश्त में जायसी का मृत्युकाल 4 रजब हिजरी लिखा है। यह काल कहां तक ठीक है, नहीं कहा जा सकता।

ये काने और देखने में कुरूप थे। कहते हैं कि शेरशाह इनके रूप को देखकर हंसा था। इस पर यह बोले –

'' मोहि का हसिसि की कोह रहि ?'' (2)

अर्थात् तुम मुझ पर हंसे हो या उस कुम्हारे पर (ईश्वर पर जिसने मुझे बनाया है) शेरशाह अत्यन्त लज्जित हुए और उन्होंने इनका अत्याधिक सम्मान किया। विभिन्न विद्वानों ने ने जायसी की 21 रचनाओं का उल्लेख किया है – पद्मावत, अखरावट और आखिरी कलाम ये तीन रचनाएं प्रसिद्ध हो चुकी हैं। अन्य रचनाओं में सखरावत, चम्पावत, इरावत, मटकावत, चित्रावत, नैनावत, स्फुट छंद, कहरनामा, मेखरावट नामा, धनावट, सोरठ और परमार्थ जपनी का उल्लेख किया जाता है। प्रकाशित रचनाओं में अखरावट में सूफी मत मत का दार्शनिक पक्ष की चौपाईयों पर प्रकाश डाला गया है और आखिरी कलाम फारसी की रचना है, जिसमें सृष्टि के अन्तिम दृश्य (प्रलय) का वर्णन है। प्रेमाख्यानक दृष्टि से उनका 'पद्मावत' एक श्रेष्ठ कृति मानी जाती है।

इनके समय में ही इनके शिष्य फकीर इनके बनाये भावपूर्ण दोहे, चौपाईयां गाते फिरते थे। इन्होंने तीन पुस्तकें लिखीं – एक तो प्रसिद्ध पद्मावत, दूसरी 'अखरावतट', तीसरी 'आखिरी कलाम' । 'अखरावट' में वणर्समाला के एक –एक अक्षर को लेकर सिद्धांत संबंधी तत्वों से भी चौपाइयां कही गई हैं। इस छोटी सी पुस्तक में ईश्वर, सृष्टि, जीव, ईश्वर प्रेम आदि विषयों पर विचार प्रकट किए गए हैं। 'आखिरी कलाम' में कयामत का वर्णन है। जायसी की अक्षय कीर्ति का आधार है 'पद्मावत' जिसके पढ़ने से यह प्रकट हो जाता है कि जायसी का हृदय कैसा कोमल और 'प्रेम की पीर' से भरा हुआ था। क्या लोक पक्ष में, क्या अध्यात्मपक्ष में , दोनों और उसकी गूढ़ता, गंभीरता और सरसता विलक्षण दिखाई देती है।

कबीर ने अपनी झाड़ फटकार के द्वारा हिन्दुओं और मुसलमानों के कट्टरपन को दूर करने का जो प्रयास किया वह अधिकतर चिढ़ाने वाला सिद्ध हुआ, हृदय को स्पर्श करने वाला नहीं। मनुष्य –मनुष्य के बीच जो रागात्मक संबंध है वह उसके द्वारा व्यक्त न हुआ। अपने नित्य के जीवन में जिस हृदयाभास का अनुभव मनुष्य कभी कभी किया करता है, उसकी अभिव्यंजना उससे न हुई। प्रेम कहानी के कवि ने प्रेम का शुद्ध मार्ग दिखाते हुए उन समान्य

जीवन दशाओं को सामने रखा जिनका मनुष्यमात्र के हृदय पर एक सा प्रभाव दिखाई पड़ता है।

'पद्मावत' में प्रेमगाथा की परंपरा पूर्ण प्रौढ़ता को प्राप्त मिलती है। यह उस परंपरा में सबसे अधिक प्रसिद्ध ग्रंथ है। इसकी कहानियों में भी विशेषता है। इसमें इतिहास और कल्पना का योग है। चित्तौड़ की महारानी पद्मावती का इतिहास हिन्दु हृदय के मर्म स्पर्शी है। जायसी ने यद्यपि इतिहास प्रसिद्ध नायक और नायिका लिए हैं पर उन्होंने अपनी कहानी का रूप वही रखा है जो कल्पना के उत्कर्ष द्वारा साधारण जनता के मन में प्रतिष्ठित था।

जायसी के काव्य में उपलब्ध रहस्यवाद तत्व भी मूलतः भारतीय परम्परा के अनुरूप है। जायसी ने पुरूष को जीवात्मा तथा प्रेयसी को परमात्मा के रूप में प्रस्तुत कर रत्नसेन रूपी जीवात्मा की व्याकुलता पद्मावती रूपी परमात्मा के लिए दिखाई है। जायसी का श्रृंगार वर्णन भी भारतीय साहित्य में वर्णित श्रृंगार परम्परा के अनुरूप है है। उन्होंने विरह वर्णन में अधिकतर भारतीय पद्धति का अनुसरण करते हुए षट् ऋतु वर्णन एवं बारहमासा वर्णन किया। जिसके द्वारा उन्होंने नागमती के विरह वेदना को बड़ी मर्मस्पर्शी बना दिया है।

जायसी ने खण्डन–मण्डन की पद्धति को न अपना कर समन्वयवादी दृष्टिकोण को वरीयता दी और उपदेशपरक काव्य की रचना न करके मधुर काव्य की रचना कर कान्तासम्मित उपदेश देने का प्रयास किया है। पद्मावत में जो सांस्कृतिक मूल्य उपलब्ध होते हैं वे भारतीय परम्परा के अनुरूप हैं। प्रेम तत्व को प्रधानता देकर उन्होंने मानव मात्र को प्रेम बन्धन में जोड़ने का स्तुल्य प्रयास किया है। पद्मावती और रत्नसेन की प्रेमकथा को प्रस्तुत करते समय जायसी ने भारतीय संस्कृति का स्थान –स्थान पर बोध कराया है। यह भी उल्लेखनीय है कि उसमें सरस्वती , पार्वती, इन्द्र, विष्णु, शिव, हनुमान, कृष्ण, राम, यमराज, कुबेर आदि विभिन्न देवी –देवताओं की सांस्कृतिक दृष्टि हिन्दू सभ्यता एवं संस्कृति की पोषक थी।

जैसा कि कहा जा चुका है कि प्रेमगाथा की परंपरा में जायसी की पद्मावत सबसे प्रौढ़ और सरस है। प्रेममार्गी सूफी कवियों की और कथाओं से इस कथा में यह विशेषत है कि इसके ब्यौरों से भी साधना के मार्ग, उसकी कठिनाईयों और सिद्धि के स्वरूप आदि की जगह– जगह व्यंजना होती है, जैसा कि कवि ने स्वयं ग्रंथ की समाप्ति पर कहा है –

'' तन चितउर मन राजा कीन्हा। हिय सिंघल, बुधि पदमिनि चीन्हा।।
गुरू सुआ जेइ पंथ देखावा। बिनु गुरू जगत् को निरगुन पावा।।

नागमती यह दुनिया अंधा। बाँचा सोइ न एहि चित बंधा।।
राघव दूत सोई सैतानू । माया उलाउदीं सुलतानू।।'' (3)

जायसी अपने ग्रंथ 'पद्मावत' में एक आदर्श प्रेम की व्यजंना की है तथा नारी के विभिन्न गुणों को भी परिलक्षित किया है। पद्मावत में नागमति का विरह वर्णन हो या दोनों रानियों नागमती व पद्मावती का जौहर होना। पद्मावत में विरह वर्णन में बारहमासा का उल्लेख है जिसमें बारह महीनों की प्राकृतिक विशेषताओं का वर्णन किसी विरहिणी के विरह वेदना को अभिव्यक्ति दी गई है। नागमती अपने प्रियतम रत्नसेन के वियोग में व्याकुल है। रत्नसेन जब से चित्तौड़ छोड़कर गए हैं तब से वापस नहीं आये, नागमती को ऐसा प्रतीत होता है कि शायद हमारे प्रियतम किसी अन्य युवती के प्रेम–जाल के अन्धन में बंध गए हैं। नागमती कहती है –

''नागमती चितउर पथ हेरा। पिउ जो गए पुनि कीन्ह न फेरा।।
सुआ काल होइ लेइगा पीऊ। पिउ नहिं जात, जात बरू जीऊ।।
भयउ नरायन बावन करा। राज करत राजा बलि छरा।।
क्रन पास लीन्हेउ कै छंदू। बिप्र रूप धरि झिलमिल इंदु।।
मनत भोग गोपिचंद भोगी। लेई अपसवा जलंधर गोपी।।
लेइगा कृस्नहि गरूड़ अलोपी । कठिन बिछोह, जयहिं किमि गोपी।।
सारस जोरी कौन हरि, मारि बियाधा लीन्ह ?
झुरि झुरि पींजर हौं भई, बिरह काल मोहिं दीन्ह ।।

जायसी की ''पद्मावत'' में गोरा बादल की कथा भी विशेष महत्व रहती है। गोरा–बादल दोनों चित्तौड़ के महान योद्धाओं में से थे जो चित्तौडगढ़ के रतनसेन के बचाव के लिए बहादुरी से लड़े थे। जब आलाउद्दीन छल से चित्तौड़ के राजा रतनसेन को बंदी बना लेता है। तो रानी पद्मावती रतनसेन को मुक्त कराने हेतु युक्ति बनाती हैं तथा रतनसेन को मुक्त कराने की जिम्मेदारी गोरा–बादल को सौंपी जाती है। गोरा और बादल दूत बनकर अलाउद्दीन को यह संदेश देते हैं कि यदि वह अपनी सेना को चित्तौड़गढ़ से हटा लेगा तो उसे रानी पद्मावती सौंप दी जाएगी तथा एक शर्त यह थी कि जब रानी पद्मावती को खिलजी कों सौंपा जाएगा तब रानी अपनी दासियों तथा सवक 50 पालकियों में साथ होंगी। योजनानुसार रानी पद्मावती की पालकी में गोरा खुद बैठ गया तथा राजा रतनसेन को मुक्त

कराने में सफल हुए। गोरा और बादल की वीरता का वर्णन जायसी द्वारा बड़े ही कुशलता से किया गया है –

''मतै बैठि बाद औ गोरा । सो मत कीज परै नहिं भोरा ।।
पुरूष न करहिं नारि – मति कौं। जस नौशाबा कीन्ह न बाँची ।।
परा हाथ इसकंदर बैरी । सो कित छोड़ि कै भई बँदेरी ? ।।
सुबुधि सो ससा सिंघ कहँ मारा। कुबुधि सिंघ कूआँ परि हारा।।
देवहिं छरा आइ अस आँटी। सज्जन कंचन, दुर्जन माटी ।।
कंचन जुरै भए दस खंडा । फूटि न मिलै काँच कर भंडा ।।
जस तुरकन्ह राजा छर साजा । तस हम साजि छोड़ावहिं राजा ।।(4)

भारतीय काव्य शास्त्र की की दृष्टि से विप्रलम्भ श्रृंगार पांच प्रकार का माना गया है –

1. अभिलाषा मूलक विरह 2. ईर्ष्या मूलक विरह 3. वियोग मूलक विरह 4. प्रवास मूलक विरह 5. शाप मूलक विरह। इनके प्रकारों में अभिलाषा मूलक विरह विरह वर्णन पद्मावती वियोग खण्ड में पद्मावती के विरह में लक्षित होता है। इसके अतिरिक्त वियोग मूलक विरह , ईर्ष्या मूलक विरह और प्रवास मूलक विरह वर्णन नागमति की विप्रलम्भ अवस्था में देखने को मिलता है। इसके साथ ही अवस्था के आधार पर पूवराग, प्रवास और करूणा जैसे विरह के प्रकारों का निरूपण भी नागमति तथा पद्मावती के विरह में दृष्टिगोचर होती है। अभिप्राय यह है कि जायसी के काव्य में विरह मूलक विप्रलम्भ श्रृंगार के सभी प्रकारों का वर्णन मिलता है। जायसी के विरह वर्णन में वेदना की प्रधानता दृष्टिगोचर होती है। उन्होंने विरह वर्णन करते समय विरह में तपने वाले वेदनात्मक स्वरूप को अधिक अपनाया है। इसलिए आपने विरही की पीड़ा, व्यथ्ज्ञाा, वेदना, कसक एवं टीस के बड़े ही मर्म स्पर्शी चित्र अंकित किये हैं। आपने प्रेमी की उस विलक्षण दशा को भी चित्रित किया है। जिसका स्मरण आते ही विरही व्यथित हो उठता है तथा अत्याधिक दुःखी होता हुआ भी उसी प्रेम का स्मरण करता है। जैसे चना गर्म बालू में भूने जाने पर उछल पड़ता है पर बाहर नहीं जाता, उसी विरही प्रेमी को बार–बार याद करके दुःख पाती है, परन्तु उसे विस्मृत नहीं कर पाती है।

''जरत बजागिनी कुरू पिउ छाहों।
आई बुझाउ अगारन्ह माहीं।
लागिउ जरै जरै अस भारू।
फिर–फिर भुजेसि, तजिउ न वारू।'' **(5)**

जायसी के काव्य में लोकतत्व :–

जायसी सूफी काव्य परम्परा के प्रतिनिधि कवि हैं, जिनकी रचनाओं में लोकतत्व विद्यमान है। उल्लेखनीय है कि जायसी मुसलमान थे किन्तु उन्होंने पद्मावत में हिन्दू त्योहारों– दीवाली, होली का वर्णन किया है, ईद आदि का नहीं। इस प्रकार वे हिन्दुओं की पौराणिक कथाओं के संदर्भ देते हुए राम, कृष्ण, अर्जुन, रावण की चर्चा करते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि जायसी के काव्य में हिन्दुओं के परिवेश का चित्रण है न कि मुस्लिम परिवेश का।

फारसी पद्धति में जंगल और बयावान का वर्णन कष्ट या विपत्ति के प्रसंग में आता है। हिन्दी कवियों में केवल जायसी ने समुद्र वर्णन किया है, वे पुराणों में उल्लिखित 'सात समुद्रों'' का वर्णन पद्मावत में करते हैं। इनमें से पांच समुद्र तो पौराणिक मान्यता के अनुरूप हैं तथा शेष दो 'मान सरोवर' और 'किलकिला' समुद्रों का जो वर्णन किया है पूर्णतः लोक कथाओं में ही आता है।

हिन्दुओं के पौराणिक वृत्तों की जानकारी जायसी को थी, किन्दु पक्की जानकारी न थी। कुबेर अल्कापुरी में रहता है किन्तु चन्द्रमा को वे स्त्री बताते हैं जबकि हिन्दुओं की परम्परा में वह 'चन्दा मामा' अधिक प्रसिद्ध है। रामायण– महाभारत के प्रसंगों एवं पात्रों से वे अच्छी तरह परिचित जान पड़ते हैं। इन्द्र द्वारा कर्ण से अक्षय कवच ले आने के प्रसंग का उल्लेख उन्होंने किया है।

भारतीय पारिवारिक जीवन में 'संस्कारों' का विशेष महत्व है। पद्मावती के जन्म पर नामकरण संस्कार हुआ तब 'देवी पूजन' का लोकाचार जायसी ने दिखाया है। विवाह के अवसर पर होने वाले लोकाचारों का उल्लेख तथा विवाह के अवसर पर पण्डित की भूमिका का वर्णन भी उन्होंने किया है।

जायसी ने ज्योतिष, रसायन वनस्पति, आयुर्वेद आदि की जानकारी का परिचय भी वस्तु वर्णन के अंतर्गत दिया है। घोड़ों के प्रकार, भोजन के विविध प्रकार, नाना प्रकार के व्यंजनों के नाम, इतिहास, भूगोल की अधूरी एवं अधकचरी जानकारी भी जायसी को थी यह निःसंकोच कहा जा सकता है। जायसी ने हिन्दू जन–जीवन को निकट से देखा था, इसीलिए उन्होंने हिन्दु रीति–रिवाज , जीवन पद्धति, लोक– मान्यताओं, लोकाचार, संस्कार, परम्पराओं, व्रत–त्योहार आदि का विशद वर्णन करते हुए पद्मावत में लोकतत्व का समावेश सफलतापूर्वक किया है।

जायसी की प्रेमभावना :–

मलिक मोहम्मद जायसी सूफी कवि थे। उनका महाकाव्य 'पद्मावत' एक प्रेमाख्यानक काव्य है, जिसमें लौकिक कथा के साथ –साथ अलौकिक संकेत भी दिए गए हैं। इस काव्य में वर्णित प्रेम कथा भारतीय है, पर प्रेम पद्धति फारसी है जो कवि के सूफी होने का परिणाम है। जायसी ने 'पद्मावत' में लौकिक प्रेम कथा के माध्यम से अलौकिक प्रेम की व्यंजना करते हुए चित्तौड़ के राजा रत्नसेन (जीवात्मा) को सिंहद्वीप की राजकुमारी (परमात्मा) के प्रेम में व्याकुल दिया गया है अर्थात लौकिक प्रेम के द्वारा अलौकिक प्रेम को पाया जा सकता है। प्रेमी के मन में अपने प्रियतम के प्रति प्रेम उत्पन्न करे के लिए चित्र दर्शन, सौन्दर्य प्रशंसा का सहारा लिया गया है। प्रेम कथाओं के नायक सामान्यतः प्रेम कोही ईश्वर मानते हैं तथा उस प्रेम को पाने के लिए कष्ट एवं त्याग के लिए तत्पर रहते हैं। पद्मावती के रूप सौन्दर्य का वर्णन हीरामन तोते से सुन कर राजा रत्नसेन उसे पाने के लिए सिंहद्वीप के लिए चल पड़ता है। अनेक प्रकार की विघ्न बाधाओं को पार करते हुए जब वह सिंहद्वीप पहुंचता है तो वहां उसे राजा गंधर्वसेन के क्रोध का सामना करना पड़ता है। अन्ततः उसे पद्मावती की प्राप्ति हो जाती है। चित्तौड़ लौटने पर राघव चेतन की दुष्टता के कारण अलाउद्दीन पद्मावती को पाने के लिए चित्तौड़ पर आक्रमण कर देता है। रत्नसेन युद्ध में वीरगति को प्राप्त होता है तथा उसकी दोनों रानियां नागमति और पद्मावति चिता में साथ जलकर सती हो जाती हैं। जायसी ने भी अपने महाकाव्य पद्मावत में प्रकृति के मनोहर रूप की झांकी प्रस्तुत की है।

निष्कर्ष :–

इस प्रकार स्पष्ट है कि जायसी भक्तिकाल के निर्गुण काव्यधारा के अंतर्गत सूफी काव्य परम्परा के प्रतिनिधि कवि है। प्रेमाख्यानक परम्परा के महाकाव्य ''पद्मावत'' की रचना करके उन्होंने यह सिद्ध भी किया है, जिसमें उन्होंने भारतीय तथा फारसी गुणों का सम्मिश्रण करते दिखाई पड़ते हैं। जायसी जी ने इस महाकाव्य में ऐतिहासिकता तथा कल्पना का अद्वितीय योग प्रस्तुत किया है। प्रेमाख्यानक काव्य को माध्यम बना कर वे जीवात्मा को परमात्मा से मिलने की व्याकुलता भी प्रदर्शित करते हैं जिस प्रकार रत्नसेन (जीवात्मा) अपनी प्रेमिका पद्मावती (परमात्मा) के गुणों से प्रभावित होकर मिलन हेतु मीन की भांति तड़पने लगता है तथा अनेक संकटों एवं बाधाओं को पार कर उसे प्राप्त करता है। जायसी का प्रकृति –चित्रण भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जब राजा रत्नसेन पद्मावती से मिलने चित्तौड़ छोड़कर जाते हैं तो नागमती उसके वियोग में व्याकुल हो उठती हैं। इसी विरह वर्णन में बारहमासा का भी उल्लेख जायसी जी ने किया है। जिसमें संयोग के समय ऋतुएं सभी प्रकार से सुखदायक प्रतीत होती हैं किन्तु वही सब वियोग के समय प्रतिकुल हो जाती हैं।

जायसी जी ने ऐतिहासिक चरित्रों का भी वर्णन बहुत कुशलता से किया है। पद्मावती के रूप सौन्दर्य का उल्लेख तो उन्होंने किया ही है अपितु उसके क्षत्राणी व पतिव्रता नारी के गुणों का भी बखान किया है जिसमें पद्मावती राजा रत्नसेन की मृत्यु के पश्चात उसके साथ सती होती हैं। इसके अतिरिक्त गोरा–बादल के शौर्य व स्वामी भक्ति का भी विशेष महत्व है, जब अलाउद्दीन ने धोखे से राजा रत्नसेन को बंदी बना लिया था तो इन्हीं वीर गोरा–बादल को रत्नसेन को मुक्त कराने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी जिसे उन्होंने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए पूर्ण किया।

जायसी की रचनाओं में वे सारे गुण हैं जो एक प्रतिनिधि कवि की रचनाओं में होनी चाहिए। उन्होंने आगे आने वाले प्रेमाख्यानक परम्परा के अन्य कवियों का मार्ग प्रशस्त किया। जायसी ने अपने काव्य में सामंजस्य पूर्ण शैली अपनाई है, उन्होंने पद्मावत में हिन्दु रीति –रिवाजों, त्योहारो व उत्सवों का चित्रण कुशलता से किया है। इस प्रकार जायसी को प्रेमाख्यानक परम्परा के अग्रणी कवि निःसंदेह माना जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नमन प्रकाशन, 2009, पृ. 56
2. प्राचीन काव्य, डॉ. संजीव कुमार जैन, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल, 2015 पृ.157
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नमन प्रकाशन, 2009 पृ. 61।
4. hi.literature. wikia.com/wiki/गोरा–बादल–युद्ध खण्ड/मलिक मोहम्मद जायसी।
5. प्राचीन काव्य, डॉ. संजीव कुमार जैन, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल, 2015 पृ.168